RNI No. DELHIN/2017/74159

ISSN 2581-8856

17

सृजन सरोकार

वर्ष 6 / अंक 2-3 / जनवरी-जून 2023

ममता कालिया

पल–पल पुनर्नवा

ISSN 2581-8856

सृजन सरोकार

वर्ष 6 | अंक 2–3 | जनवरी–जून 2023

प्रधान संपादक

गोपाल रंजन

कार्यकारी संपादक

कुमार वीरेन्द्र

कार्यालय

G.H.–1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स,
लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली–110063

RNI NO. DELHIN/2017/74159

ISSN 2581-8856

सृजन सरोकार

वर्ष 6 | अंक 2–3 | पूर्णांक 17 | जनवरी–जून 2023

प्रधान संपादक

गोपाल रंजन

कार्यकारी संपादक

कुमार वीरेन्द्र

सम्पादक मंडल

प्रो० कृष्णचन्द्र लाल
kclal55@gmail.com

प्रो० अजय जैतली
ajayjaitly@gmail.com

डॉ. सुभाष राय
raisubhash953@gmail.com

प्रो० मिथिलेश
onlymithilesh@gmail.com

अरविन्द कुमार सिंह
arvindksinghald@gmail.com

आवरण : प्रो. अजय जैतली

मुद्रक–प्रकाशक

उमा शर्मा रंजन

संपादन सहयोग

अवनीश यादव

कला पक्ष

द पर्पल पेपर, नई दिल्ली

GH-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स, लाल मार्केट के सामने,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063
फोन : +91-11-4007 9949
मो.नं. : +91-95554 12177, +91-94156 46898
ईमेल : srijansarokar@gmail.com,
granjan234@gmail.com

इस अंक का मूल्य : 120 रुपए

व्यक्तियों के लिए : 240 रुपए (वार्षिक)
संस्थाओं के लिए : 500 रुपए (वार्षिक)
सृजन सरोकार रजिस्टर्ड डाक से मँगाने हेतु एक वर्ष का डाक खर्च 120 रुपए अतिरिक्त
सौजन्य सदस्यता : 5000 रुपए

notnul.com और srijansarokar.page पर भी उपलब्ध

शुल्क सृजन सरोकार के नाम से निम्नलिखित खाते में भेजें
Bank Name : The Nainital Bank Ltd., New Delhi
A/C No. : 0492000000012646
IFSC : NTBL0DEL049

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक उमा शर्मा रंजन द्वारा
एस.आई. प्रिंटर्स, 1534, कासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान,
दिल्ली–110006 से मुद्रित एवं
GH-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स, लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली–110063 से प्रकाशित
सम्पादक :* गोपाल रंजन

संचालन संपादन अवैतनिक

सभी विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन।
प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
* सामग्री चयन के लिए पीआरबी एक्ट–1867 के तहत जिम्मेदार

अनुक्रम

अपनी बात

जीवन की हलचल में ममता की टोह — 4

आत्मकथ्य

लिखने की शुरुआत-ममता कालिया — 5

पुनर्प्रस्तुति

ममता कालिया-रवीन्द्र कालिया — 20

संस्मरण

और लिखना बाक़ी है-विभूति नारायण राय — 31

नौलखा गद्य का अनूठापन-अखिलेश — 33

जिक्र में जो इश्राक़ रह गए-नीलाक्षी सिंह — 41

एक यादगार संस्मरण के बहाने-रामनिहाल गुंजन — 49

मनस्विनी मित्र : ममता कालिया-मीना झा — 52

म से ममता-वंदना राग — 58

मान-गुमान से परे एक पारदर्शी व्यक्तित्व -अनिता गोपेश — 62

ऐसी शख़्सियत जिसमें है भरपूर बड़प्पन -वाज़दा ख़ान — 65

ममता कालिया का सान्निध्य-रतन कुमारी वर्मा — 68

उनके चेहरे से अपनापन सा झरता लगा-शैलेंद्र शांत — 71

साक्षात्कार

लेखन बहुत परिमार्जित और समृद्ध करता है -ममता कालिया से गीताश्री की बातचीत — 74

नज़रिया कोई निश्चित और पूर्व निर्धारित चीज नहीं होती-ममता कालिया से निशांत की बातचीत — 86

लेखक पति समझदार होता है, दुनियादार नहीं -ममता कालिया से संदीप तोमर की बातचीत — 96

आलेख

ममता कालिया की कविताएं : सबसे अच्छे कथानक सूझते हैं रात में-सुभाष राय — 103

ऐसे ही हर आज का कल होता रहा -गणेश गनी — 110

पठनीयता से अधिक विश्वसनीयता की रचनाकार -श्रीप्रकाश शुक्ल — 117

एक सांस में लिखने की आदत!-विजया सती — 121

पितृसत्ता का दंश वाया केकी अंक्लेसरिया की ट्रैजिडी-विंध्याचल यादव — 125

स्त्री विमर्श की अवधारणा और ममता कालिया -रवि शंकर सोनकर — 130

कथा-संसार और नारी विषयक दृष्टिकोण -गीता शर्मा — 134

दुक्खम-सुक्खम : राष्ट्रीय आन्दोलन की चेतना और स्त्री-मुक्ति का प्रश्न-राम विनय शर्मा — 138

स्मृतियों के शहरों में ममता कालिया-पल्लव — 147

बेघर : स्त्री संघर्ष की गाथा-संयोगिता वर्मा — 155

बेघर : नारी मन का गवाक्ष-शुभा श्रीवास्तव — 158

बेघर : भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति -कुमारी उर्वशी — 162

ममता कालिया के कथा-साहित्य में नारी चेतना -शिप्रा श्रीवास्तव 'सागर' — 167

ममता कालिया को पढ़ते हुए-गीता दूबे — 170

सपनों की होम डिलीवरी : बदलते संबंधों की नई दास्तान-शिव कुमार यादव — 175

स्त्री-पुरुष के रिश्ते : सपनों की होम डिलीवरी -एकता मंडल — 178

कल्चर-वल्चर: मूल्यों के बिछलन की गाथा -रेनू त्रिपाठी — 182

सीट नम्बर छह : बहुरेखीय कहानियाँ -अनिता रश्मि — 187

छुटती नहीं काफिर मुँह की लगी हुई -धारवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी — 191

रवि कथा में छिपी व्यथा-शिवानी जयपुर — 194

ममता जी अपनी तरह से जीने का स्पेस रचती हैं -अनिरुद्ध उमट — 202

अंदाज़-ए-बयां उर्फ रवि और ममता की अनंत प्रेम कथा-संघमित्रा पृष्टि — 204

दौड़ : बाज़ारवाद और भूमंडलीकरण की गिरफ़्त में युवा-प्रेम कुमार साव — 216

ममता का सफ़र-ए-इलाहाबाद -अमित साव — 219

कविता

यह दास्ताने इश्क़-यतीश कुमार — 114

लक्षित-अलक्षित

प्रत्यालोचना-कुमार वीरेन्द्र — 222

जीवन की हलचल में ममता की टोह

जैसे-जैसे लड़की बड़ी
होती है
उसके सामने दीवार खड़ी
होती है
क्रांतिकारी कहते हैं
कि दीवार तोड़ देनी चाहिए
पर लड़की है समझदार
और संवेदनशील
वह दीवार पर लगाती है
खूँटियाँ
पढ़ाई-लिखाई और रोज़गार
की
और एक दिन धीरे से
उनपर
पाँव धरती हुई
दीवार की दूसरी तरफ
पहुँच जाती है

-ममता कालिया

यह कविता ममता जी की सोच को व्याख्यायित करती है। वे परम्परा और आधुनिकता का ऐसा समन्वय हैं, नारी स्वतंत्रता की प्रबल समर्थक लेकिन अराजकता की ओर बढ़ते कदमों को ज़ोरदार ढंग से रोकती हैं। अपने समकालीनों में सबसे अधिक लोकप्रिय, सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली लेखिका ममता जी के सहज स्नेहिल व्यक्तित्व की तरह ही उनका लेखन भी सघन संवेदनाओं का आवर्तन है, हमें अपने बहुत भीतर झांकने को विवश करता है। भारतीय समाज की विशेषताओं और विषमताओं पर पैनी नज़र रखते हुए ममता कालिया की रचना में स्त्री विमर्श उपस्थित है। विकासशील समाज में बनते बिगड़ते संबंध, प्रगति के आर्थिक सामाजिक दबाव, स्त्री की प्रगति को देखकर पुरुष मनोविज्ञान की कुंठाएँ और कामकाजी स्त्री के संघर्ष पर उनकी कलम अब भी अद्भुत संसार रचती है।

ममता जी की विशेषता है बेबाक् अभिव्यक्ति, उनके व्यक्तित्व में कहीं समझौता या झिझक नहीं, जूझने की अद्भुत क्षमता है जिसकी वजह से वे तमाम विसंगतियों के बावजूद समय से पूरी ताक़त से लड़ती हैं। जब दिल के झटके को सहज ढंग से कह देती हैं, हल्की टूट-फूट होती रहती है।

ममता कालिया पर बहुत कुछ लिखा गया है, लिखा जा रहा है और लिखा जाता रहेगा परंतु मुझे लगता है, इस गुटबाज़ दुनिया में एक निर्गुट लेखिका को जो स्वीकार्यता मिलनी चाहिए, वह नहीं मिली है। हर इलाहाबादी इलाहाबाद से बेपनाह मुहब्बत करता है परंतु ममता जी की मुहब्बत कुछ ख़ास है, उनके ख़्यालों में, उनके लेखन में यह मुहब्बत पारदर्शी है। इलाहाबाद मेरा भी महबूब शहर है, मेरा घर है परंतु कुछ वर्षों पहले तक ममता जी को, उनकी रचनात्मकता को पूरी तरह से आत्मसात् करने के बाद भी निजी रूप से जान नहीं पाया था। दिल्ली में उनके क़रीब आया और उनके ममत्व ने मुझे बांध लिया। यह विशेषांक एक ज़रूरी आयोजन है। इसे बहुत पहले आना चाहिए था परंतु कुछ ख़ास व्यवधान के चलते विलम्ब हुआ। रचनाकार मित्रों और सहयोगियों का आभारी हूँ।

इस अंक के संपादन के दौरान ममता कालिया की रचनाओं और इसमें सम्मिलित लेखों से गुजरकर हमनें महसूस किया जीवन की हलचल में ममता की टोह कठिन भी है और सरल भी। वास्तव में ममता की रचनाएं पल-पल पुनर्नवा हैं। बहरहाल, पत्रिका की अपनी सीमा है, पृष्ठ सीमा में बंधे रहने के कारण कुछ अन्य महत्वपूर्ण लेख नहीं दे सका। उम्मीद है पाठकों को यह अंक निराश नहीं करेगा। पाठकीय प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।